LIFELOVEME शिक्षण शृंखला

भगवद्गीता के लिए संस्कृत व्याकरण

श्लोक-पठन सहायक • हिंदी v1.0

रामः • फलम् • खादति

सीखने का वचन

पहले उदाहरण। फिर ढाँचा। पारिभाषिक नाम तभी, जब वह समझ बढ़ाए।

सुधीर के. अग्रवाल, पीएचडी

हिंदी संस्करण • v1.0 • 16 अगस्त 2026

LifeLoveMe: जीवन से जुड़ा सीखना

LifeLoveMe सीखने, चिंतन, स्वास्थ्य, संबंधों, स्मृतियों और व्यावहारिक सहायता का मानव-केंद्रित ढाँचा है। इसमें तकनीक और AI सहायक हैं—वे ज्ञान को व्यक्ति के लक्ष्य के अनुसार व्यवस्थित करते हैं, पर अनुभव, विवेक और आत्म-अन्वेषण का स्थान नहीं लेते।

लेखक के बारे में

सुधीर के. अग्रवाल, पीएचडी, अभियंता, शिक्षक, शोधकर्ता, उद्यमी और लेखक हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ सस्केचेवान से विद्युत अभियांत्रिकी में पीएचडी की और चार दशकों से अधिक समय तक विद्युत-प्रणाली विश्वसनीयता, प्रायिक विधियों, कंप्यूटर मॉडलिंग और इंजीनियरिंग सॉफ्टवेयर पर कार्य किया है।

उनकी रुचियों में AI, शिक्षा, संस्कृत, भारतीय ज्ञान-परंपरा, अध्यात्म, चेतना, स्वास्थ्य, इतिहास और सामुदायिक अध्ययन सम्मिलित हैं।

संपर्क	विवरण
नाम	Sudhir K Agarwal, PhD
स्थान	San Diego, California, USA
फोन	+1 858 213 7564
ईमेल	info@lifeloveme.com
ढाँचा	LifeLoveMe

1. उद्देश्य

यह मार्गदर्शिका भगवद्गीता में बार-बार आने वाली व्याकरणिक रचनाओं को पहचानने में सहायता करती है। यह पूर्ण व्याकरण या शब्दशः अनुवाद नहीं है।

पठन सिद्धान्त

संस्कृत को तुरन्त हिंदी/अंग्रेज़ी क्रम में न दबाएँ। विधेय खोजें, सम्भावित रूप पहचानें, अन्वय जोड़ें, संधि खोलें, फिर अनुवाद बनाएँ।

क्या देखें	प्रश्न	प्रमाण
विधेय	क्या कहा गया?	क्रिया, कृदन्त, संज्ञा/विशेषण, अध्याहृत अस्ति
सहभागी	कौन करता/अनुभव करता/प्रभावित?	विभक्ति + क्रिया की आकांक्षा
संबंध	कौन से पद साथ हैं?	लिंग-वचन-विभक्ति अन्वय
सीमा	कौन सी ध्वनियाँ/पद जुड़े?	संधि और समास
विमर्श	विरोध/क्रम कैसे जुड़ता?	निपात, सर्वनाम, यत्–तत्

सहायक संदर्भ

वर्णमाला, पूर्ण विभक्ति सारांश, धातु, रूप, लकार, संधि और शब्दावली के लिए संस्कृत शिक्षण सहायक v0.2 देखें।

2. एक उपयोगी विश्लेषण

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। — 2.47

रूप	पहचान	कार्य
कर्मणि एव	सप्तमी एकवचन + एव	केवल कर्म में
अधिकारः ते	प्रथमा + षष्ठी सर्वनाम	तुम्हारा अधिकार
मा	निषेध निपात	मत / न हो
फलेषु	सप्तमी बहुवचन	फलों/परिणामों में
कदाचन	अव्यय	कभी भी

यहाँ “अस्ति” समझा जाता है। पहले रूप, फिर संबंध, और उसके बाद दार्शनिक व्याख्या करें।

3. विभक्ति संबंध बताती है

विभक्ति	प्रश्न	गीता उदाहरण
प्रथमा	कौन/क्या?	आत्मा
द्वितीया	किसे/क्या?	माम्
तृतीया	किससे/द्वारा?	आत्मना
चतुर्थी	किसके लिए?	हिताय
पञ्चमी	कहाँ से?	धर्मात्
षष्ठी	किसका?	धर्मस्य
सप्तमी	कहाँ/किसमें?	कर्मणि, फलेषु

4. वचन और अन्वय

पाठ	संकेत	अर्थ
न जायते म्रियते वा कदाचित्। • 2.20	एकवचन क्रियाएँ	न जन्मता, न मरता
वेदाविनाशिनं नित्यम् ... • 2.21	द्वितीया एकवचन अन्वय	उसी referent के विशेषण
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि। • 2.23	शस्त्राणि + छिन्दन्ति बहुवचन	शस्त्र इसे नहीं काटते

5. सर्वनाम और युग्म

रूप	अर्थ	उपयोग
अहम् / माम् / मया	मैं / मुझे / मेरे द्वारा	विभक्ति से भूमिका
त्वम् / त्वाम् / ते	तुम / तुम्हें / तुम्हारा	अर्जुन संबोधन
सः / सा / तत्	वह	पूर्व संदर्भ/विरोध
यत् ... तत्	जो/जो कुछ ... वह	relative-correlative
यदा ... तदा	जब ... तब	काल-संबंध
यथा ... तथा	जैसे ... वैसे	तुलना

6. क्रिया: काल, भाव, आदेश

कार्य	उदाहरण	योगदान
वर्तमान	भवति	है/बनता है
भूत	अब्रवीत्	कहा
भविष्यत्	भविष्यति	होगा
आज्ञा	विद्धि, कुरु	जानो, करो
सलाह/संभावना	उद्धरेत्	उठाना चाहिए
निषेध	मा ... कृथाः	मत करो

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। — 6.5

रूप	पहचान	टिप्पणी
उद्धरेत्	विधिलिङ्	उठाना चाहिए
आत्मना	तृतीया	अपने द्वारा
आत्मानम्	द्वितीया	अपने को
अवसादयेत्	णिजन्त विधिलिङ्	नीचे न गिराए

7. कृदन्त

रूप	गीता उदाहरण	पठन
-त्वा/-य	विहाय 2.22; परित्यज्य 18.66	मुख्य क्रिया से पहले/साथ, सामान्यतः वही कर्ता
वर्तमान कृदन्त	ध्यायतः 2.62	चल रही क्रिया; संज्ञा से अन्वय

रूप	गीता उदाहरण	पठन
भूत कृदन्त	उपहत- 2.7	पूर्ण/परिणामी अवस्था
-तव्य/-नीय	कर्तव्य विचार	आवश्यकता

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। — 18.66

8. वाच्य और पद

प्रस्तुति	प्रश्न	उदाहरण
कर्तृवाच्य	कौन क्या करता है?	करोति
आत्मनेपद	क्रिया को subject-सापेक्ष कैसे प्रस्तुत किया?	वर्तते
कर्मवाच्य	क्या प्रभावित है? कर्ता कैसे व्यक्त?	हन्यते 2.20

सावधानी

परस्मैपद/आत्मनेपद conjugational systems हैं; हर रूप में “दूसरे के लिए/अपने लिए” का यांत्रिक अर्थ न दें।

9. संधि

लिखित	विभाजन	परिवर्तन
कर्मण्येव	कर्मणि + एव	इ + ए → ये
अधिकारस्ते	अधिकारः + ते	विसर्ग → स्
नैनम्	न + एनम्	अ + ए → ऐ
उद्धरेदात्मना	उद्धरेत् + आत्मना	त् → द्

10. समास

समास	सम्भावित विग्रह	अर्थ
धर्मक्षेत्रे	धर्मस्य क्षेत्रे	धर्म का क्षेत्र
कर्मफलम्	कर्मणः फलम्	कर्म का फल

समास	सम्भावित विग्रह	अर्थ
स्थितप्रज्ञः	स्थिता प्रज्ञा यस्य	स्थिर बुद्धि वाला
धर्मसंमूढचेताः	धर्मे संमूढं चेतः यस्य	धर्म में भ्रमित चित्त वाला
कर्मयोगः	कर्मणा योगः / कर्मरूपः योगः	प्रसंग संबंध तय करे

11. छोटे अव्यय, बड़ा प्रभाव

शब्द	सामान्य बल	सावधानी
न	नहीं	साधारण निषेध
मा	मत	निषेधात्मक आदेश
एव	केवल/निश्चय ही	स्थान से focus
तु	परन्तु	विरोध
हि	निश्चय/क्योंकि	व्याख्या/बल
च	और/भी	समन्वय
अपि	भी/यहाँ तक कि	प्रसंग-संवेदनशील
इति	इस प्रकार	उद्धरण/विचार सीमा

12. काव्य-पदक्रम

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः। — 2.7

संकेत	विश्लेषण
पृच्छामि	मैं पूछता हूँ; उत्तम एकवचन
त्वाम्	द्वितीया; जिसे पूछा
कार्पण्य-दोष-उपहत-स्वभावः	प्रथमा एकवचन विशेषण; अध्याहृत “मैं”
धर्म-संमूढ-चेताः	प्रथमा एकवचन; उसी “मैं” का वर्णन

लचीला क्रम क्यों?

अन्वय दूर रखे विशेषणों को पृच्छामि से मिले छिपे कर्ता से जोड़ता है। छन्द स्थान बदलता है, नियम समाप्त नहीं करता।

13. आठ चरणों की worksheet

चरण	क्या लिखें
1 ध्वनि	पढ़ें; विराम चिह्नित करें
2 विभाजन	संधि खोलें; समास बाँटें
3 विधेय	क्रिया/कृदन्त/संज्ञा/अस्ति
4 रूप	stem/root + features
5 संबंध	अन्वय, valency, कारक
6 गद्यक्रम	anvaya बनाएँ
7 अनुवाद	पहले शाब्दिक, फिर सहज
8 विश्वास	विकल्प और अनिश्चितता

14. अभ्यास के श्लोक

श्लोक	मुख्य कार्य
2.20	एकवचन विधेय और निषेध
2.22	विशेषण अन्वय, विहाय, यथा
2.47	संधि, सप्तमी, अध्याहृत विधेय
3.21	यत्–तत् युग्म
4.7	यदा रचना, षष्ठी
6.5	आत्मन् के तृतीया/द्वितीया और विधिलिङ्
18.66	कृदन्त, आज्ञा, द्वितीया

आत्म-जाँच

क्या प्रत्येक संबंध का प्रमाण दिखा सकते हैं? व्याकरण से स्थापित अर्थ और टीका की व्याख्या अलग रख सकते हैं? अनिश्चितता ईमानदारी से बता सकते हैं?

15. आगे का मार्ग

- स्तर 0: विधेय और सहभागी।
- स्तर 1: नियमित रूप, अन्वय और वाच्य।
- स्तर 2: संधि, कृदन्त, समास और अध्याहार।
- स्तर 3: कठिन विकल्प, काव्य और confidence।
- संस्कृत शिक्षण सहायक: सभी reference charts और शब्दावली का एक स्रोत।